[illegible]
[illegible]

गर्गसंहिताकी मथुराखण्ड अ० ११ मे कथा कुवलयापीडकी
कि [stain] एक समय वन मे जाता था मद मे भरा हुआ सो आगे
त्रित नाम ऋषि आवे थे उस [stain] के वेग से आये ते उन
की भुजाओं के बल सो त्रित ऋषि गिर गये फेर उन्होंने क्रोध
कर के शाप दे दिया के तुं गज होय फेर उसने प्रार्थना करी हे
ब्रह्मन् शाप तो आप को दिया परन्तु मेरा उद्धार हु अपयोनि से कब होय
यह प्रार्थना उसको करी फेर ऋषि जी को कहा के द्वापर के अंत
मे कृष्ण भगवान के हाथ से तेरा मोक्ष होयगा ये
वे यथा वत् मे गज हुवा कुवलयापीड नाम करके
हुआ सहस्त्र गजों का बल था उस मे फेर वो हस्ति
जरासंध को बल कार कप कड लिया था फेर
उस जरासंध को कंस को ताई दे दिया था जब
धरा तल मे कृष्णावतार हुये तब भगवान ने कंस को
मारने को आते चलते तब वो हस्ति गज कंस को द्वार पर
खडा कर दिया था उसका मोक्ष फेर कृष्ण भगवान ने
किया सो यह कथा मथुरा खण्ड मे है ॥ चाणूर पूर्व जन्म
मे अमरावती पुरी मे उतथ्य नाम महा मति था
उस का पुत्र था चाणूर सो आदत के वो ह अपने
बालपन कम को त्याग कर के तृतीय पक्ष मे जो युद्ध करना
का पाठ उसको सिखने लग गया करण को लग जाता
हुवा तब उन्हो के पिता को शाप दे दिया के तु मल्ल
हो जावो असुर होय द्वापर अंत मे कृष्ण भगवान के
हाथ से बलदेवजी के हाथ से मोक्ष होयगा ॥ चाणूर ।
ऋषि … कूट ३ शल ४ तोशल ॥ यह पञ्च पूर्व त्रेता
काल मे … असुर होय गये द्वापर अंत मे कृष्ण से मोक्ष हुआ

के सूधे भाता के कन्यगोधसे आदलेकर के आठवें पहर
वसिष्ठ मे अलकापुरी के विषे देव यक्ष था उसके पुत्र
आठों एक समय उस यक्षराज को महादेव के पूजन क
रणे के वास्ते पुष्प तोडने को भेजे उन्हों को पुष्पों को तोड क
र के सुधि ति पाकर आण नारके पिता को दे दिये तब को त
पिताने उन्हके संघरणे का कारण जान लिया फेर क्रो
ध होकर के शाप दे दिया के तुम असुर हो उन्हको आ
ठों को भी हमारा उद्धार कब होगा तब पिता ने कहा
के द्वापरान्त मे कृष्ण भगवान के हाथ से तुम्हारा मो
क्ष होगा ॥ तत्काल असुर हो गये फेर जब द्वापरान्त
मे कृष्णावतार हुये तब उन्ह के भगवान को मारा त
नु भो चार उपायक कथा है उन्हके पूर्व जन्म की अल्प
अब नारद जी की कथा लिखते है ॥ नरा एदं दं भ्रे त्रा
न [illegible] त घृतिखण्ड पतीति नारदः ॥ एक समय ना
रद मुनि चित्रु यों के संग कर के लम्पट होरहे थे
तब ब्रह्मा जी को शाप दे दिया के तुम शूद्र हो दासी पु
त्र हो उसी काल फेर नारद जी दासी पुत्र हुये ॥ पह
ले गई इस को जंधर्व का शाप था फेर शूद्र का शाप हु
आ ॥ यह सभ कथा गर्ग संहिता की है ॥ अल्पमति प्रसङ्ग
और भागवत मे नारद जी की कथा ई प्रकार है ॥
नारदो सूतौ ॥ नारद जी दासी पुत्र जब हो गये त
ब व्यास जी को अपने पूर्व जन्म की कथा सुना
वते है ॥ हे व्यास जी एक समय चातुर्मास मे म
हात्मा ऋषियों की सेवा मे मेरी माता लगी
हे कररी थी तब मै भी अपनी माता के संग महा
त्मा ऋषियों की सेवा मे जाता था तब गया उन्ह मे

हो ग्रवेखरो

सावों का उच्छिष्ट प्रसाद ग्रहण करता था उस करके
मेरी बुद्धि शुद्ध हो गई और वो महात्मा ऋषि मेरे
को ज्ञानोपदेश करके चले गये पश्चात् कुछ दिन बीत
ते पर मेरी माता जो दोहने अर्थ को चली तब मार्ग में
वो हसर्प को डस लई थी फेर मैं उसका सम कर्म
करके तप करने को चला गया मेरे को उन महात्मा
नों के पास स्मृति ज्ञान संपूर्ण यथार्थ वर्णन हो
यह कथा नारद जी व्यास जी को अपनी उत्पत्ति
की श्रवण करते हुये॥ अलम्॥ अवभृकोत्पत्तिर्व
र्ते महाभारतादि ग्रंथों में से॥ अरणी मथ्यतो व्यासस्य
वीर्य्यम् अरणी पपात ततः शुको जातः॥ अथ विश्वामित्रो
त्पत्तिः॥ जातो धरम्भ्ये महातेजाः समिद्धु इव पावकः॥
तपसा ब्राह्मणत्वं जयतोलेभे ब्राह्मणत्वं च सत्तम॥
अथ अजामिलोत्पत्तिः॥ कान्यकुब्जे द्विजः क
श्चिद्दासीपतिरजामिलः इत्युक्तेः॥ कल्पा
न्ते नारायण एक एव आसीत्॥ नारायण कल्पा
न्त में एक होते हुये॥ नरेण अन्नाद्य विद्यावेत्ता जो
वेन स्वकर्म द्वारा रचे नार शरीर तदेव अयनं
प्रवेश स्थानं यस्य सः नारायणः एको हवै नारायण॥
आसीत्॥ तस्य नाभि कमलाद् ब्रह्मा हुये॥ ब्रह्मा के म
न से मरीचि॥ मरीचि का पुत्र कश्यप ऋषि हुये
कश्यप का पुत्र विवस्वान सूर्य्य हुये सूर्य्य की दो स्त्रि
यों एक संज्ञा एक छाया॥ संज्ञा के सूर्य्य के सकास
त श्राद्ध देव मनु हुये यम और यमुना जो यह संतती है
यह की से वास्ती कहुई॥ छाया के शनि पुत्र हुये॥॥

आजु देव मनु की स्त्री श्रद्धा नाम करके थी तिसके १०
पुत्र हुये ॥ इक्ष्वाकु १ नृग २ शर्याति ३ दिष्ट ४ धृ
ष्ट ५ करूषकः ६ ॥ नरिष्यन्त ७ पृषध्र ८ ॥ नभग
९ । कवि १० ॥ नभग का पुत्र नाभाग हुवा ॥ नाभा
ग का पुत्र अम्बरीष राजा हुवा ॥ स्वायंभुव म
नु के दो पुत्र हुये ॥ प्रियव्रत १ उत्तानपाद २ ॥
उत्तानपाद का पुत्र ध्रुव हुवा दूसरी स्त्री से उ
त्तम पुत्र हुवा ॥ सत्यव्रत मनु राजा का पुत्र विव
स्वत हुवा विवस्वत के वैवस्वत मनु हुवा तिस
की छींक ते इक्ष्वाकु हुये तिसका पुत्र निमि
हुवा राजा तिस निमि की देह को ऋषियों को मं
थन किया उस से जनक राजा हुये विदेह
सो होए ते वैदेही कहते हैं ॥ मंथन करके हुये
इस से मैथिल भी कहते हैं येन मिथिलां निर्मि
ता ॥ इक्ष्वाकु राजा के खट्वांग हुवा यह
भी लिखा है ॥ खट्वांग राजा के दीर्घबाहु हुये
दीर्घबाहु का पुत्र रघु राजा हुये तिस रघु का पु
त्र अज हुवा अज का पुत्र दशरथ हुवा ॥
दशरथ के चार पुत्र हुये ॥ यह भागवत स्कं० ९ में क
था लिखी है ॥ पद्मपुराण में लिखा है ॥ पुंजं बभूव तु स
मस्तेन्ध्यो रामलक्ष्मणौ तथा भरतशत्रुघ्नौ ॥
पायसांशा वपसास्यवतः ॥ १ ॥ पद्मपुराण का

केर

वाक्य है॥ दशरथने पुत्रेष्टि यज्ञ करा उस यज्ञ का
शेष चरू अन्न पायसांश जो था उस भाग ४ चार करे
फेर चार के दो भाग करे॥ एक भाग में ते अर्द्ध भाग को
कौशल्या को दिया अर्द्ध भाग सुमित्रा को दिया एक भाग कैके
यी को। कौशल्या के तो रामचन्द्र जी हुये और सुमित्रा के
लक्ष्मण शत्रुघ्न हुये॥ लक्ष्मण जी रामचन्द्र जी के
अंश हुये सहोदर की तुल्य हुये एक भाग पायस खी
का देणे ते॥ इसी अभिप्राय को देखकर के तुलसी दास
जी को अपनी रामायण में लिखो है मिलपन सके र
होदर भ्राता यह वाक्य लिखा है॥ उदर एक सह वर्तमा
न: सहोदर: यह पद एक कोश दोनों को [illegible]णों से प
ह पद लिखा है॥ फेर एक भाग कैकयी को दिया उस
से क भरत जी हुये॥ रामचन्द्र जी मास चैत्र शु०
९ पुनर्वसु नक्षत्र कर्क लग्न में हुये मघा में हुये॥
श्लेषा में लक्ष्मण शत्रुघ्न हुये॥ पुष्य में भरत जी
हुये॥ लग्न मीन में हुये॥ फेर रामचन्द्र जी के दो पु
त्र हुये सीता जी के॥ लव १ कुश २ लक्ष्मण जी के
दो पुत्र अंगद चित्रकेतु हुये॥ भरत जी के दो तक्ष
१ पुष्कल २ शत्रुघ्न के दो पुत्र सुबाहु १ श्रुतसेन २
हुये॥ फेर कुश का पुत्र अतिथि हुया है॥ इस प्र
कार सूर्यवंशी राजा हुये॥ सीरध्वज राजा यज्ञ
के वास्ते पृथ्वी को खनन कर रहा था हल से ह
ल के अग्र भाग से सीता जी हुई॥ उस सीर
ध्वज का भ्रात जनक था उसके संतति नहीं थी फे
र सीरध्वज को सीता जी उसको दे दई थी सो सीर

से
जो सीताजी आश्रम से जो सिद्ध हुई और जनक
से जो कि हुई प्रसिद्ध ॥ त्रिशंकु के हरिश्चन्द्र हु
ये हरिश्चन्द्र के रोहित हुये पुत्र ॥ तिसके हरि
त ॥ हरित का पुत्र चंपक ॥ तिसका पुत्र सुदेव
सुदेव का पुत्र विजय ॥ विजय का पुत्र भरुक ॥
तिसके वृक पुत्र हुवा वृक का पुत्र बाहुक हुवा ॥
एक काल मे बाहुक स्त्री सहित वन मे गया का
ल करके मृत होगया तिसकी स्त्री अग्नि मे प्रवे
श होणे के वास्ते उद्यत हुई तिस काल में और्व
ऋषि आगये तिस स्त्री को सगर्भा जाणकर
को अग्नि मे प्रवेश होणे ते हटा देते हुये रोक देते हु
ये फिर उसको विष दे दिया तब थोड़े काल मे
वे उसे मृत होती हुई गर नाम विष का है ॥
गरेण सह वर्तमानः सगरः सगर नामकर
के पुत्र हुया वोह सगर को उत्पन्न
करके आप मृत होगई ॥ सगर के रकस
हि उत्पन्न होणे से सगर नाम से राजा
विख्यात हुये ॥ तिस सगर के ६० सहस्र पु
त्र हुये जिन्होंने सागर समुद्र किया एक का
ल मे उन्हों को यज्ञ किया अश्वमेध यज्ञ मे अ
श्व घोड़ा छोड़ा तिन्हों का अश्व इन्द्र ने हर लि
या उपरान्त तिस सगर पुत्र देखणे अश्व को ॥

गये फिर ते फिरते कपिल देव ब्रह्मचारि के आश्र
म मे पहुंच कर ऋषि ने जैसी चे तप कर रहे थे
उन को देखकर अपणे मन मे यही विचार करा
के हमारा अश्व इसी को चुराया है यही विचार है
तब ऋषि जी को क्रोध हो कर के श्राप दे दिया के तु
मे व्यापक हमारे ऐसे चोरी लगाई है इसका सो तु
सार पहां भस्म हो जावो यह श्राप दे दिया तो के
ता ऋषि के श्राप से भस्म हो गये तब सगर रा
जा के दो स्त्री थी रानी के पुत्र तो ६०,००० भस्म हो
गये दूसरी स्त्री के सगार की
असमंजस नाम कर के पुत्र हुवा तिसके अं
शुमान हुवा अंशुमान को कपिल देव जी वा
स्तुति करि पर आश्रम मे कोई दिन रहते रहे
तप करते रहे कर कपिल देव जी प्रसन्न हो
कर के अश्व को ध्यान कर के बतादेते हुये देदेते
हुये और कहते हुये के हे अंशुमान तेरे
पितृ जब गंगाजी की इच्छा करते हैं सो
तूं तप कर के गंगा जी को प्राप्त करके उनका उ
द्धार कर यह कपिल जी की वाती सुण कर के
अश्व को ले कर के चलागया घर पर जा
कर के यज्ञ करा फेर यज्ञ कारके सगर
अंत हो जये अंशुमान फेर तप कर णे को
लगगया ता हुवा गंगा जी के निमित्त जब गंगा
जी न ही आई तब वो ही अंशुमान वी काल वी

दलीप को राज्य दे कर के
मृतजु वा फेर दिलीप भ...

गति को देखता रहा उसको फेर तप को छोड दिया
फेर थोडे दिन पीछे उसके पुत्र भगीरथ हुवा
फेर अंशुमान ने भगीरथ को राज्य दे करके
फेर गंगाजी के अर्थ तप करते (कि) मृत होग
ये फेर भगीरथ जी को तप करके गंगाजी
प्रसन्न करी फेर गंगाजी भूलोक मे आ
ई फेर सगर के पुत्रों की भस्म को ले कर
के उद्धार उनका किया यह कथा सग
र राजा की समाप्त हुई ॥ भगीरथ के श्रुत पु
त्र हुवा श्रुत के नाभ नाम के अपर अपरके सि
धुद्वीप पुत्र हुवा तिसके अयुतायु तिसके ऋतु
पर्ण पुत्र हुवा जो नल राजा का मित्र था ॥
यह कथा है ॥ अथ सोमवंशी राजों की वंशावली ॥
नारायण की नाभि से ब्रह्मा ब्रह्मा से अत्रि पु
त्र हुए फेर अत्रि ऋषि के दृष्टि से चंद्रमा हु
ये चंद्रमा का गुरु जो बृहस्पति जी की
स्त्री से तारा से संबंध हुवा यह कथा लिख
ते है ॥ एक समय चंद्रमा ने बृहस्पति जी
की स्त्री तारा को अपने घर मे रखा तिया उ
सको साथ रमण भोग विलास करके
ते रहे तब बृहस्पति जी लेने को आये
तब चंद्रमा को नहीं भेजी अभी का म...

इसको नहीं हुई है पह सुएण करके गुरुजी
को इन्द्र के पास कहा इन्द्र ने चंद्रमा को कहा
बृहस्पति की स्त्री को दे देना चाहिये चंद्रमा को
एक बात भी नहीं सुनि और युद्ध करने को
उद्यत हुआ तब ब्रह्मा जी को बृहस्पति की स्त्री
तारा बृहस्पति जी को दवा दई उस समय
पर तारा के गर्भ था जब पुत्र हुवा तब चं
द्रमा कहने लगे के यह पुत्र हमारा है और
बृहस्पति कहे के हमारा है तब तारा से
पूछा के गर्भ किसका था तारा ने कहा कि
चंद्रमा का है तब उसी वख्त ब्रह्मा जी ने
चंद्रमा को दे दिया उसका नाम बुध धरे
ख दिया बुध ही बुध की उत्पत्ति कथा है ॥ फेर
बुध की स्त्री इला नाम करके होती हुई
तिसके पुरुरव नाम पुत्र हुवा ॥ जैमि
दजिन ने ऋषि के पुत्र परसुराम जी हुये
॥ पुरूरव सबका आयु नाम करके पुत्र हुवा
आयु के नहुष नाम राजा पुत्र हुवा ॥ स
ग्रा होते के जो नहुस राजा हुये जिन्होंने गं
गाजी को कुरली कर के पी लिया था ॥
इसी से जाह्नवी गंगाजी को कहते हैं ॥
फेर और कथा लिखि० बृहद्धात्रेस्य पुत्रो हस्ति
येन हस्तिनापुरं ... इ० ३ श्लो० २ वंगी
॥ यह कथा है ॥

स्वकी पुत्रीतपति नाम कर के होती हुई ओर संवरण की स्त्री हुई तिस के पुत्र कुरू चोत्रपति कुरू नाम के सुके हुए है॥ तपत्यां सूर्य्यकन्यायां कुरू चोत्रपति कुरू: परीक्षित सुध न्नु हुने बधाश्व करो स्तता:॥१॥ स्कं० ९ मे अ० २२ से श्लो० ४ है पक ॥ वक दुध के कुशाग्र पु हुवा। पहली स्त्री से पहडु से दूसरी स्त्री से जरा संध पुत्र हुया॥ अन्यस्यां चापि भार्य्यायां शकले द्वे वृहद्रथात्॥ ते मात्रा बहिरूत्सृष्टे जरया चाभिसंधिते जीव जीवेति क्रीडंत्या जरासंधोऽभवत्सुत:॥ स्कं० ९ अ० २२ श्लो० ८ का प ह खो। कहे॥ राजा प्रतीपक हुवा। तिस के पुत्र ३ तीन हुए॥ देवापि शांतनु: २ वाल्हीक:॥३॥ तत्र राजा प्रसे हुए जिस जो हाथ वसु की अपना हाथ स्पर्श कर दे वेष्य वो ही वसु भी वा हो जाति थी शांतनु की स्त्री गंगा जी वी तिस के पुत्र भी भ्मजी प्रहरा राजा हुए फेर गंगा जी तो अन्तर्धान हो गई इति सत पुरुखा [illegible] दासकी

पुत्री सत्यवती की साथ विवाह करवाया पहले उ
सी सत्यवती के कुमारी के परापर ऋषि
के सकाश ते व्यासजी का जन्म हुया था उ
स को सत्यवती को मछोदरी भी कहते थे प
ता है जो मछ पकडके उस के जाल
मे आगई थी उसी वास्ते उस को मछोदरी
कहते है दास कन्या ॥ तिस को फेर मछोद
री को शांतन को विवाहि फेर मछोदरी के दो
पुत्र चित्र विचित्र नाम वारके होते भये
चित्रांगद तो गंधर्व ने युद्ध के विषे
मार गेरया और दूसरा विचित्र वीर्य को
क्षयी रोग हो गया था वोह इस के
स कम रू गया था ॥ यह कथा महाभा
र की है और भा० स्कं० ९ अ० २२ मे भी लि
खिहै ॥ और भारत सार मे यह भी लिखा है कि ॥
चित्र विचित्र ने अपनी मा [illegible] के पास भीष्म
जी को सेवा करते हुये को देख कर के उन
को मनसा पाप हो गया उस मनसा पाप के
प्रायश्चित से [illegible] शुष्क अश्वत्थ मे पिपता
मे भस्म हो कर के मर गये फेर मछोद
री को भीष्म जी स्वीकार कर के व्यासजी
को बुलाया उनकी दृष्टि से [illegible] को कारी

जब कि पुत्री ३ थी। अंबिका १ अंबालिका २॥
अंबा ३ इन को भीष्मजी स्वयंवर मां से
काशी राज के ते ल्याय थे। आप ने आप भीष्मजी
विरक्त थे उन्ह ने चित्रांगद १ विचित्र ने को
दे दई। एक ३ तीसरी जो अंबा थी सो बो हद
सी थी। जब चित्र विचित्र मर गये
तब मर्यादा के कारण से भीष्मजी को बा
सजी को बुलाया उन्ह की दृष्टि के प्रगाड़
को चित्र विचित्र की राणियों को निकाला॥
तब एक को महा शरीर पर मल कर के प्रगाडी को
निकाली एक केशों को शरीर पर रगर कर निकली
एक वैसे ही निकल गई तब जी सकी माह्म
ली थी उस के तो पांडु पुत्र हुवा जिस को के
रोग रोग थे शरीर पर। उस के पुत्र धृतराष्ट्र
अंधा हुवा॥ जो अंबा दासी थी उस के प
सो पुत्र विदुर जी हुये॥ धर्मो विदुर रू
पेण शूद्र योनौ वजगह्मतः॥ यह विदु
र रूप सा चात् धर्म राज है हो वे हुये॥ फेर
पांडु के पुत्र कुंती के आवा हन देवतावों
के कारण से युधिष्ठरादिक हुये॥ धर्म को
आवाहन से युधिष्ठर॥ पवन के आवाहन से
भीम॥ इन्द्र से अर्जुन॥ अश्विनी कुमा

यों के आवाहन करने से नकुल सहदेव हुए थे ॥
धृतराष्ट्र के गांधारी से दुर्योधन से आदि
ले कर के शत पुत्र हुए थे ॥ इस प्रकार कुरु की
उत्पत्ति की कथा महाभारत पर्व आदि में
सविस्तार से है प्रलम्ब ॥ एक दुःशला ना
म कार कन्या हुई ॥ वने मृगशापात् मैथु
ने रुद्धरूप पांडोः कुन्त्यां धर्म वायु इन्द्रेभ्यो ॥
युधिष्ठिर भीमार्जुना जाताः ॥ माद्र्यां अश्वि
नी कुमारात् नकुल सहदेवौ जातौ ॥ द्रौप
द्यां पंचभ्यः पंच पुत्रा अभवन् ॥ युधिष्ठि
र के पुत्र प्रतिविंध्य हुआ ॥ भीम के श्रुत
सेन ॥ अर्जुन के श्रुतकीर्ति ॥ नकुल के
शतानीक ॥ सहदेव के श्रुतकर्मा ॥ और
युधिष्ठिर को के अन्य और स्त्रीयों
से उत्पन्न हुए पुत्रों की गिनती है ॥ युधिष्ठिर के पौ
रवी स्त्री ● से देवक पुत्र हुआ ॥ भीम के
हिडंबा से घटोत्कच पुत्र हुआ और भीम
की काली स्त्री से सर्वगत पुत्र हुआ ॥ अर्जुन
के उलूपी नाग कन्या से इरावान पुत्र
हुआ ॥ और मणीपूर की सुता से चित्रांग
दा से उत्पन्न का धर्म धार के दिया हुआ बभ्र
वाहन नाम कर के पुत्र हुआ ॥ और सु
भद्रा के अभिमन्यु पुत्र हुआ ॥ सहदेव के

गन्धोगपकरुनानीपाछ्त्र हुवा५ (सत्यभामा के हुये जो प्रद्युम्न ये
त सेन र भीम से न ३ उग्रसेन ४

विजयाकेविषसेहोत्रपत्रहुया ॥ नकु
लकरेणुमतीसे निरमित्र हुया ॥
आपि मन्युकपरिदोतिन्हां राज हुये ॥ प
रन्तातकजनमेजयपत्रहुवा इसप्रका
रकथाहे कुरुकोउत्पत्तिकी अलम् ॥ औ
आहुकराजाकदोपुत्रहुये एकतोदेवकहु ॥ औ
रदुसराउग्रसेन आर आहुक राजा के १ पुत्री
केन्याहुई ॥ [redacted] ॥ देवक
के ४ चारपुत्रहुये ॥ उग्रसेनके ६ नवपुत्र
हुये कंसस आदि लेकरके और ५ पुत्रीहु
ई कंसा कंसवती इत्यादिक ॥ देवकीपुत्री
देवककीहुई ॥ देवमीढकपुत्रहुवा शूर
सेन शूरसेन के मारिषास्त्री से दशपुत्र
हुये वसुदेव १ देवभाग २ देवश्रवा ३ आन
कदुन्दुभि ४ इत्यादिक पुत्र हुये और शूरसे
नकपुत्री ५ हुई ॥ पृथा १ श्रुतदेवी २ इत्यादि
क कन्या हुई ॥ पृथा को शूरसेन अपने मि
त्र के ताई कुंतिभोज के ताई देता हुवा ॥
उसके संतति कुछ नहि थी इसीवास्ते पृ
था कुंती नामसे विख्यात हुई ॥ श्रुतश्रवा
राजाधिदेवी ४ पृथ्यादि ॥ शूरसेनकी पंच
पंच कन्या होती भई ॥ कुंतिभोज अपनी
कुंतीको पांडु के ताई देता हुवा ॥ और शूर

सेन अपाणि कंन्या श्रुतश्रवा को चेदि राज
दमघोष के तांई देता भया फेर दमघोष क
श्रुतश्रवा स्त्री से शिशुपाल पुत्र हुवा श्री
र फेर शूरसेन अपाणि पात्री राजाधि॥
देवी को जयसेन राजा के तांई देता भ
या फेर जयसेन राजाधिदेवी स्त्री से
विंदानुविन्द पुत्रों को उत्पन्न करता हुवा
फेर श्रुतदेवा को शूरसेन कारुष वृद्ध
शर्मा के तांई विवाहता हुवा फेर श्रुतदे
वा के कारुष वृद्धशर्मा के सकाश से
दंतवक्त्र हुवा ॥ अलम् ॥ वसुदेव के
७ सात स्त्री थी ॥ पोरवी १ रोहिणी २ भद्रा
३ मदिरा ४ रोचना ५ इला ६ देवकी
७ वसुदेव के रोहिणी से बलदेव जी पुत्र
हुये गद सारण दुर्मद विपुल ध्रुव कृ
त आदि पुत्र हुये ॥ पोरवी स्त्री से वसुदेव
के सुभद्र भद्रबाहु दुर्मद भद्र भूता
द्या द्वादश पुत्रा अभवन् ॥ मदिरा पं
मदिरा स्त्री के विषे वसुदेव के नंद उपनंद
कृतकः शूरादि का हुये ॥ भद्रा के केशी १॥
रोचना स्त्री के हस्त हेमांगद आदि पुत्र
अभवन् ॥ इलायामुरुवल्को

देके पुत्र हुये॥ धृतदेवा को विपृष्ठ पुत्र हु
वा॥ शान्तिदेवा के अप्रमति तादि पुत्र
ऽभवन्‌॥ उपदेवा के कल्प वर्षा घादि
दश पुत्रा ऽभवन्‌॥ श्रीदेवा के वसुहंस
सुवंशा घा प्रमुख षट्‌ पुत्रा ऽभवन्‌॥ देवर(क्षि)
ता के गदादयो नव पुत्रा ऽभवन्‌॥ सहदे
वा के पुरु विश्रुतादयो ऽष्ट पुत्रा ऽभवं
न्‌॥ वसुदेवात्‌ देवक्यां अष्ट पुत्रा ऽभवं
न्‌॥ कीर्तिमंत (सुषेण २ भद्रसेन ३ ऋ
जु: ४ संमर्दन: ५ भद्र: ६ संकर्षण: ७)
अष्टम स्तु स्वयमेव हरि: ८॥ सुभद्रा ना
म कन्या जाता॥ बलदेव जी की स्त्री ककु
द्मी की पुत्री रेवती होति भई॥ कृष्ण की
रुक्मणी से आदि लेकर ८ पटराणी हुंई
और १६ सहस्त्र स्त्री और हुई॥ औ
र संतति पुत्र पौत्रादिक अनन्त हुये हैं
दशमस्कंध में सविस्तार लिखे है॥
राजा कृतवीर्य के सहस्रार्जुन पुत्र
हुवा॥ ययाति राजा के यदु पुत्र हुवा
जिसते यादव वंश प्रसिद्ध हुवा॥ वं
दिम राजा के यदु वंश में ... नजवा

फिर वृष्णि के दो पुत्र हुये॥ श्वफलक और चित्र
रथ॥ श्वफलक के गांदिनी स्त्री से तेर
ह और पुत्र हुये॥ यह यदुवंश की उ
त्पत्ति की कथा समाप्त हुई॥ कुवलया
श्व नाम राजा केरलाधिपति था तिसका पु
त्र चंद्रहास युवराज वह पुत्र हो गया तिस
के पश्चात् राजा केरलाधिपति भी स्वर्ग को
गये पश्चात् तिस की स्त्री भी मृत हो गई॥
तब चंद्रहास एकाकी रह गया॥ एक सम
य में दुष्टबुद्धि नाम राजा के पास चला
गया उस दुष्टबुद्धि की संतान न होती
थी उसके चंद्रहास देखा और ऋष
ि महात्माओं को उसका हाथ दिखा
या तब सब ऋषियों ने देखकर क
हा के यह लड़का बहुत श्रेष्ठ है
आप इस की रक्षा करो इसप्रकार कह
कर के ऋषि चले गये राजा उसकी
रक्षा करता रहता था॥ मुद्गल ऋषि का पुत्र
दिवोदास हुआ और अहल्या पुत्री हुई
वो अहल्या गोतम के तांई विवाह दई
तिसके पुत्र शतानन्द नाम करके हुआ
यह भा० स्क० ९ में कथा है॥ श्लो० ३४॥ श्री:

इन्द्र को गौतम का रूप धारके कहा के मै कामातुर तु
अहल्या को कहे अब गाल ने हो है ॥ १५

एक समय राम चंद्र जो विश्वामित्र के साथ यज्ञ
के घर को जाते थे मार्ग मे शिला को देखा
राम चन्द्र जी पूछने लगे के ये यह क्या है वि
श्वामित्र बोले हे भगवन् यह गौतम की स्त्री
अहल्या है इसका रूप देख कर एक स
मय इन्द्र आदिक मोहित हुये थे तब लागि
को नेम जल से कर के पूछे गौतम को
अवाद दी उस समय का इन्द्र मौका देख
रहा था एक दिन जो गौतम मुनि गंगा स्ना
न करने को अरुणोदय से पहले ही च
ले गये तब इन्द्र को मौका देखा शीघ्र चं
द्रमा को बुलाकर कहा के तू अहल्या के घ
र पर स्थित हो मै इस के घर मे जाता
हूं तू देखता रहिये तब इन्द्र अहल्या के पा
स गया तब वे गंगाजी को कहा के हे गौत
म अभी अरुणोदय नही हुवा स्नान
का तेम नही है तू अपने घर मे च
ला जा शीघ्र तब गौतम जी शीघ्र आ गये
द्वार पर चन्द्रमा को देख कर के क्रोध हो कर
मृग छाला मारी चंद्रमा भाग गया फेर घर
मे अहल्या को पूछा के इतनी देर मे क्या कि
पाट खोला तो अहल्या बोली के भगवान् आप तो
कामातुर हुये मेरे को कह रहे हो के मै कामा

हुए हैं इतने में क्रोधवंत हुये तब ऋषि गौतम जी
को ध्यान लगाकर के देखा के पर स्त्री गमन इं
द्र को करा है तब उसी काल इन्द्र को शाप दे
दिया के तू सहस्त्र भग होजा है मेरे शाप ते सहस्त्र
भग भी वाला हो और अहल्या को वी शाप दे
दिया के तू शिला हो पथर की होजा रामावता
र जब होकर जनकपुर को जाने मार्ग में
तेरे को देख कर के अपने चरण तेरे ऊपर स्प
र्श करेंगे तब तेरा मोक्ष होगा यह कथा विश्वा
मित्र को रामचंद्र जी के पास कही तब अप
णा चरण स्पर्श करके अहल्या पार तारि मो
दोवारा यह अहल्या कथा समाप्त हुई अलप
अब द्रौपदी की जन्म कथा लि० है ॥ राजा भी
सोमक के पुत्र उत्पन्न हुये १०० तिन में ज्येष्ठ
वृद्ध पुत्र पृषत नाम करके हुवा ... क
निष्ठ हुवा ॥ जन्तु वड ज्येष्ठ पुत्र था और
र पृषत कनिष्ठ था पृषत के पुत्र
द्रुपद नाम करके हुवा ॥ राजा द्रुपद हु
ये राजा द्रुपद को पुत्रेष्टि यज्ञ करणा था याज
ऋषि को यज्ञ करा या तिस हवन कुण्ड
में से अग्नि में से एक कन्या और एक पु
त्र द्रोण का घातक धृष्टद्युम्न नाम करके

विश्रावसीतुपा[illegible]

उत्पन्न हुवा॥ फेर द्रुपद द्रोणाचार्य्य का शत्रु था इस
को द्रोणनी के पुत्र उत्पन्न करणे के वास्तो॥
यज्ञ करया था॥ द्रुपद की कन्या कारण से द्रौ
पदी कहलाई॥ फेर धृष्टद्युम्न के पुत्र
धृष्टकेतु हुये॥ यह पांचाल देश के॥
राजा हुये हैं त्रिगर्भाधिपति॥ जो कह्या है॥
श्रवस रावण कुंभकरण विभीषण कुबेर जी
को कोतवाल था लिखते हैं॥ पुलस्त्य ऋषि
का पुत्रै सा रावण कुंभकरण विभीषण
हुये कुबेर हुवा॥ फेर ब्राह्मणों के शाप
किस कारण से होगये सो कह्या है लिख
ते हैं॥ एक समय रावण पूर्व जन्म में
प्रतापभानु राजा था एक समय उस
ने सहित परिवार के ब्राह्मणों को नि
मंत्रण दिया और भोजन मांस मि
श्रित रस कर रखा कर के ब्राह्मणों को
बुलाया भोजन करणे के वास्ते जब
ब्राह्मणों के अगाडी भोजन आया तब
उसी वखत आकाशवाणी हुई के यह
भोजन मांस से [illegible] अन्नकरण॥

यह चरित्र देख कर केश्रा [illegible] को शाप दे दीया के तुं सहित परिवार के राक्षस होजा ॥ तेता युग मे रावण होकर सभ राक्षस होजाय फेर रावण को वडा तप कर ब्रम्हा जी के प्रस न करणे को तप से ब्रम्हा प्रसन्न हुए वर दिया के तुं अजय हो राम चंद्र जी से तेरा मोक्ष होगा और की हाथ से वी तु जीता जावेगा नही ॥ वैकुंठ भगवान को द्वैकाल मे अपने जय विजय पार्षदों को शाप दे दिया था के तुं राक्षस हो कृतयुग मे हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु हुये त्रेता मे रावण कुंभकरण हुये द्वापर मे यही शिशुपाल दंतवक्र हुये भगवान को कह दिया था के मै तुम्हारा नरसिंह रामचंद्र कृष्ण हुं अवतारों को धारण कर के तुम्हारा उद्धार करूंगा यह वी शाप था ॥ कुंभकरण को ब्रम्हा जी को तप कर के प्रसन्न किया वर मांगा छ मास की निद्रा मांगी ॥ विभीषण को भक्ति भगवान के चरणारविंद मे हो यह वर मांगा ॥ यह कथा है इन की ॥ मयदानव की पुत्री मं

॥

ये धीयु ई सो रावण की धी हुई॥ वा तौ इन्द्र का
पुत्र हुवा इन्द्र का वीर्य्य था तौ पुर
षा र गया था। सो कारण से वा
ली कहता था॥ सुग्रीव सूर्य्य
का पुत्र हुवा॥ अगस्त मुनि के
भस्मे हुवे॥ द्रोणाचार्य की उत्पत्ति
वोकुं भस्से हि है॥ राजा उसी नर के
शिवि राजा हुये॥ शिवि का पुत्र के
कय हुवा जिसको पुत्री केकयी
राजा उत्तपाकावति पुत्र हुवा॥ अ
धिरथ नाम करके राधा कुं उमेद
सजाति रहे करथा जब कुंती अपणे
गर्भ के वीर्य मांते वालक कुं जल
कुंड में गेर करके चली गई थी कु
मारि तब कुंडल सहित वालक
को देख करके अधिरथ को पाल
न करया कर्ण नाम वी उसी को ध
रदि या था सूर्य की दृष्टी से हुया था
कुंती को दुर्वासा ने मंत्र पढ़ा था के दे
तावों के आवाहन करने का मंत्र सज को

दे देवौ तब उसके मंत्र बल से कुंती को सूर्य
का आवाहन करा या कुमारी को मंत्र की प
रीक्षा के वास्ते फेर गर्भ कुंती के होगया था सूर्य
की दृष्टि से अस्तम्भु ॥ विनता और कद्रू ये
दो स्त्री कश्यप जी की थी विनता के दो पुत्र
हुये गरुड १ अरुण २ गिलति पन्नगानू
अश्नातीति गरुड: ॥ कद्रू सर्पों की माता हो
ती भई ॥ एक समय पर विनता की और कद्रू की
आपुस में कलह होती भई कद्रु का कहना
के है गरुड मात है विनते सूर्य के घोडे की
पूछ श्वेत है या काली है विनता को कह
के श्वेत है तब कद्रू ने कहा के जो श्वेत तो मैं
पूछ है तो मैं तेरी दासी होकर करके रहूं गी ॥
जो काली है गी तो तू मेरी दासी हो जाना
यह निश्चय करके कद्रु ने अपने पुत्रों को क
ह दिया के तुम सूर्य के घोडे की पूंछ पर
लिपट जावो उसी वखत लिपट गये तब क
द्रु ने विनता से कहा के देख घोडे की पूंछ का
ली है या श्वेत देखे तो काली है उसी दिन से
कद्रु की दासी हो गई विनता उसी दिन से स
र्पों का द्वेष गरुड जी को साथ होता भया
गरुड जी को सब सर्प पर राज पकरे अपनी माता
की कद्रु का दासी पन से छुडवाया ॥ श्री ॥

एक समय इन्द्र को जब वृत्रासुर की ब्रह्महत्या लगी तब इन्द्र मानसरोवर में कमल की नाल में छुप के जा कर के बैठ गया तब देवताओं ने राजा नहुष को धर्मात्मा जाण कर के स्वर्ग का राज्य दे दिया फेर जब वो जगदी पर बैठ गया तब इन्द्राणी से कहने लगा के तू मेर को वर ले मैं तेरा पती हुं तब इन्द्राणी को बहुत चिन्ता हुई उस ने गुरु से कहा तब बृहस्पती जी कहणे लगे वो हे इन्द्राणी जो नहुष अब के तेर को कहे गा तो तुम्हे को पालकी में ब्राह्मणों को पालकी में जोड़ कर के आवना मेरे द्वार पर फेर वरूंगी तेर को तब इन्द्राणी को ऐसा ही कह दिया अब विनाश काल विपरीत बुद्धि होती है नहुष को उसी वखत ब्राह्मणों को पकर के उन के कंधे पर पालकी को धर के आप पालकी में बैठ कर चलते समय कहणे लगा के सर्प सर्प शीघ्र गती चलो तब से सर्प प्रयोग होता है इस कथा को जो धवल पक्ष की पदवा को कहणे

त्तगा तब ब्राह्मणों को क्रोध हो कर के श्राप दे
दिया के सर्प होय तब उसी काल में अज
गर हो के कूप में गिर के मृत्यु को प्राप्त हुवा
इस भांति कौंध सिद्ध हो गया ॥ ७ प्रसंग ॥
अब त्रिशंकु राजा की कथा लिखते हैं ॥ १ ॥
एक समय राजा त्रिशंकु ने वशिष्ठ
जी अपने गुरु जी से कहा के मैं ए
सा यज्ञ करना चाहता हूं जिस के
करने से सा देह से स्वर्ग
में चला जाऊं वशिष्ठ जी को उस
राजा को अभिमान जान कर के
श्राप दे दिया के तू चाण्डाल हो जा तब
वोह राजा फेर विश्वामित्र के पास ग
या उन्होंने यज्ञ करा या जब देवता विघ्न
करणे को लगे तब नवीन देवता बनाकर स्व
प्स को समान एक रा और त्रिशंकु राजा
से कहा के तूं स्वर्ग को चला जा पर जब वोह स्व
र्ग में पहुंचा तब देवतावों को नीचे गेर दि
या तब विश्वामित्र को तप के बल से
अधर ही में राजा को रोक दिया फिर एन
ही दिया सो राजा त्रिशंकु पर्वत के अध
र में ही है लटकते देखते हैं ॥ ७ मल ३

आत्माराम ब्राह्मण के पुत्र तुलसीदासजी हुये
हस्तिनापुर के वासी थे कान्यकुब्ज ब्रा
ह्मण थे संवत १५८३ में ठकुर के तुलसीदा
स पुत्र हुये वाल्मीकजी का अवतार हुये॥
ममता देवी तुलसीदासजी की स्त्री थी॥ य
ह तुलसीदासजी की उत्पत्ति है॥ अब वाल्मी
कजी की उत्पत्ति लिखते हैं॥ वाल्मीक पूर्व
जन्म में व्याध थे व्याध वृत्ति कर के अपने
कुटुंब को पालना करते थे एक समय मा
र्ग में फीरते हुये को ऋषि महात्मा मिल ग
ये उन्होंने कहा के तूं क्या कर्म करता है तब
कहा के मेरा कर्म वध करने का है अब मैं तु
म्हारा भी वध करूंगा तब ऋषियों ने कहा
के तूं जिन के वास्ते वध करता है ऐसा घो
र कर्म करता है वो हतरी परलोक में कुछ
भी सहाय नहीं करेंगे उन्होंने जा कर पू
छा के तुम मेरी कुछ सहाय भी परलो
क में करोगे या नहीं मेरे पाप के आधेका
री होगे या न हो तब उन्होंने पुत्र कलत्रादि
कों ने कहा के हम तेरे पाप के आधेकारी न
हीं होंगे तब सुण कर के बहुत दुःख को प्राप्त
हुवा ऋषियों के पास जा कर के कहा के
महाराज मेरे पाप का कोई भी अधिकारी न

 उसका ५

ता है तब ऋषियों ने उसको राम राम नाम मंत्र का
उपदेश करदीया फेर वोह राम नाम तो स्मर
ण करणा भुल गया मरा मरा यह
विपरीत मंत्र का जप करणे को लग गया तो
हुया तब [illegible] शरीर रह गया फेर [illegible] जन्म
भृगु वंश में हुवा भृगु के पुत्र हुवा वाल्मीक
और प्राचेतस ये दो नाम [illegible] हुये फेर
पूर्व स्मृति उस महात्मा को सत्संग
के प्रभाव से [illegible] बनी रही फेर [illegible] तप क
रता रहा उसी विपरीत मंत्र को जपता रहा
मरा मरा कहता जपता रहा फेर तप करते कर
ते के उपर [illegible] के शरीर वल्मीक से आच्छादि
त होगया ढका गया तब [illegible] शरीर की रक्षा
करणे के वास्ते प्रचेता नाम वरुण को मन
कूल वर्षा करके [illegible] उसकी रक्षा करदई
इस वास्ते वल्मीक से आच्छादित होणे ते
वाल्मीक नाम से विख्यात हुये ॥ और प्रचे
ता वरुण को रक्षा करी इस वास्ते प्रचेता व
रुण का पुत्र कहता ये ॥ यह वाल्मीक जी
की उत्पत्ति की कथा है ॥ अल भी प्रसंग
॥ यह सम्पूर्ण ऋषियों के सत्संग का प्रभा
व है ॥ [illegible] श्री प्रवर प्रजापति जी की उत्पत्ति

एक समय पर इंद्र दिकपाल कैय राक्षस के गणों से पीडीत हुये थे वि
श्री शंकर भगवान से ॥

एक समय पर रंभा नाम अप्सरा को देख करके ॥
मित्रावरुण के व्यभिचार कर्म से अगस्त मु
नि का जन्म घट कुंभ में होता भया फेर ऋ
षि महात्माओं की कृपा से असी सामर्थ
शक्ति अगस्त जी को हो गई के ... के
स्नान करण को अपने के हेवा री थे स्नान हम
को यहां हि आग्या केर के खावें तब समुद्र
नहीं आया तब क्रोध होके एक सम
द्र कोही ने आचमन कर लिये असी
शक्ति अगस्त जी को थी महात्माओं की
कृपा से और निकन्त शान को शक्ति
वी ऊंची की कृपा से हो गई थी ॥ समाप्तम्
॥ अगाडी वेन की कथा ॥ विंध्याचल पर्वत की क
था ॥ ध्रुव जी की कथा ॥ अजामिल की कथा ॥
और गजेन्द्र की कथा ॥ राजा चित्रकेतु की
कथा ॥ एक समाप्तम् ॥ और कथा लिख
ते हैं ॥ एक समय पर इन्द्र दिक देवता
कालकेय नाम राक्षस के गणों
से पीडित हुये भगवान के शरण
गये समस्त देवता तक एक के श्री
भगवान ने ... सम ... लोक ... तब

भगवान बोले के हे देवता वो वो हम
तुम सगण समुद्र के पास पे हे
पै समुद्र कौ नाही सुखा सकता हु क्युं के समुद्र
लक्ष्मीजी का पिता है तुम लोग अगस्त मुनि
जी के पास जावो। एह वाक्य सुनकर के देव
ता अगस्त जी के पास गये उन से प्रार्थना
करी तब अगस्त मुनि को समुद्र के तीन
आचमन कर लिये तब देवताओं का
कार्य सिद्ध कर दीया ॥ प्रलम्ब ॥ एक स
मय देवता दैत्यों का युद्ध बहुत हुवा तब देवता
युद्ध करते करते हार गये तब देवता राजा
दशरथ के पास गये के हे राजन् आप युद्ध
दैत्यों की साथ करके हमारी रक्षा करो।
तब दशरथ युद्ध करने को तयार हुये
तब केकई ने कह होगया के मैं भी आ
प की साथ चलूंगी तब दशरथ केकै
यी को साथ ले करके दैत्यों की साथ युद्ध
करते भये तब युद्ध करते करते दशरथ
के रथ का चक्र का कील टुट गया त
ब केकई ने अपने हाथ से रोक करके
चक्र को न हो हारने दिया तब दैत्यों को पराज

पकिपात वृ राजा दशरथ को प्रसन्न होके र
के कहाके हे केकयी तुम ये दु वर मागतु
मको मेरे रथ के चक्के को रोक करके मेरी
रक्षा करी सो तुं वर मांगतब केकयी ने
कहाके जब मेरा कुछ मोका वर मांगणे
का होगा तब वर मांगुंगी फेर दशरथ के
कयी को लेकर एक देवता वो का कार्य सिद्ध
करके वे लेगये सो जब रामचंद्र जी को
राजतिलक होणे लग्या तब केकयी को
वोह वर मांगणे का समय पया दके रात
न दशरथ से कहा के राम चन्द्र को वन
वास भरत को राजतिलक होणा चा
हिये पर समय पर का केकयी को याद करण्या
प्रत भांति प्रसिद्ध है ।। एक समय पर इन्द्र को व
त्रासुर की ताप डुकर ते इन्द्र के पास
जब वृत्रासुर पराज्य न हीं हुवा तब य
ह विचारण लगे इसका मृत्यु किस उ
पाय के करणे से हो तब गुरु को कहा के
दधीचि ऋषि के अस्थि यों का [illegible] वज्र
करके मारो तब इसका मृत्यु होजा ।।
तब इन्द्र ने दधीचि की प्रार्थना करी दध
ीचि को [illegible] के अस्थि दे दिये तब व

इन्द्र को वृत्रासुर को मारा वो ह वृत्रा
सुर पूर्व जन्म मे चित्रकेतु राजा
था॥ यह कथा भा॰ स्कं॰ ३।४ की है॥
राजा बलि की वामन भगवान की कथा भा॰
स्कं॰ ८ प्रथम मे है॥ अब राजा हरिश्चन्द्र
की कथा लि॰ है॥ एक समय इन्द्र की
सभा मे वशिष्ठ मुनि आये ~~[illegible]~~
~~[illegible]~~ विश्वामित्र आये तब वशिष्ठ
मुनि विश्वामित्र से बोलते के है वि
श्वामित्र इस समय मे राजा हरि
श्चन्द्र की तुल्य कोई दानि नही है
सत्यवक्ता कोई नहि है तब विश्वामित्र
ने कहा के मै उसके सत्व को हरण
करूंगा तब यह प्रतिज्ञा करके स्वप्न मे रा
जा से सर्वस्व दान लिया तब प्रातःकाल वि
श्वामित्र बोले के हे राजेन्द्र दक्षिणा दान की दे
ना योग्य है तब राजा को राज्य छोड़ कर काशी
पुरी मे जा कर के अपनी स्त्री पुत्र को
एक ब्राह्मण के हाथ वेचि दिया और आ
पभी स्मशान का अधिपति चाण्डाल
के हाथ विक कर के विश्वामित्र को दक्षि

॥६६॥ देखो सत्यके रषवनेके वास्ते राजा का इतना विश्वास देखनेके वास्ते विश्वामित्रने कोई इतने यत्न करके फेर व्यतीत दुःखी या परन्तु राजा अपने सत्यसे नहीं हटा। विश्वामित्र को यहांतक दुःख दिया के राजा की राणी को तारामती को वेडे तक रषा और राजा को उसके ऊपर कन्नु उठाने को प्रसंग आया परन्तु फेर वी राजा को सत्य नहीं छोडा॥ उसी कालमें भगवान को प्रसन्न होके राजा का हाथ पकडके कहा के हे राजन् वर मांग मैं प्रसन्न हुं या तेरी सत्य प्रतिज्ञा को देखकर के तब राजा बोले हे भगवन् तारामती स्त्री और रोहितास पुत्र और विश्वामित्र के तुल्य दान तो नेवाना पहन्येरको जन्मजन्मके प्रति मिलते हैं॥ तब भगवान को सम्भवर देदिये फेर श्रादको वैकुंठ वास देदिया और रोहितास को अयोध्यापुरीका राज्य देदिया॥ यह कथा है

एक समय राजा दशरथ कौशल्या से कहने लगे कि हे भद्रे एक समय मैंने दुष्ट स्वप्न देखा तब फिर मैं गुरु वशिष्ठ जी के पास गया जाकर के स्वप्न का वृत्तान्त सब कह दिया तब वशिष्ठ जी बोले कि हे राजन् वन में जाकर के तीन मृग को मारो तब दुष्ट स्वप्न का फल निवृत्त होगा यह वाक्य सुन करके फिर मैं वन में गया और सब दिन को ई भी मृग मेरे को नहीं मिला जब संध्या होगया तब एक सरोवर के किनारे पर एक वृक्ष था उसके मूल में मैं जाकर के बैठ गया और मन में विचार यह करता था कि जो पशु पक्षी प्यासा सरोवर पर जलपान करने को आवेगा तब बाण मारूंगा तब भावि करके श्रवण अपने माता पिता अंधों को कांवर में बैठा करके काशी पुरी को ले जाता था सो उस सरोवर के निकट कांवर को उतार करके पानी भरने को आया था मैंने उसी पानी के शब्द को सुन करके निश्चय करके बाण मारा उसी वखत उस श्रवण ने हा हा कार करा तब मैं उसके समीप गया उससे पूछा के तू कौन है उसने कहा कि मैं श्रवण हूं मेरे माता पिता वृद्ध हैं उनको जल प्यावने के वास्ते यहां आया था सो [illegible] उनको जल प्यावो बोलता

नहीं तुलको फेर वोला कि मेरी छाती में से बाण
को खैंच कर निकाल लेवै तो अब शरीर को
त्यागता हूं ऐसे जब कहा तब राजा ने बाण के
हाथ में ले के रके उस के पास जा या तब राजा
को उस के मुख के जल को लगाया तब के
ह अंध वोले के हे पुत्र तु वोलता क्युं नहीं
अव तक तू नहि वोलेगा तव तक हम
पानी जल को नहीं पान करेंगे पल
के नेत्र करके राजा को आप हाथ
भक्तो ने अपराध का स्मरण किया
तव उसने कहा के हम को उस के
पास ले चलो तव वो पुत्र के पास
जाके अपने हाथ से पुत्र को देखा वुला
पा तव वो हे जब वन ही वोला तव वहुत
विलाप करने लगे और पह कहा
के हम भी चिता वीचि सबके समीप
चले जावें तव उस को मरे को यह
शाप दीया के तेरा भी पुत्र के वियोग
से प्राण मेरे न छ हो जायेंगे शाप देके
र के वो हे पुत्र सहित भस्म हो जा
ते तीनों के शरीर के संस्कार करके देव

मापमे छूट गये॥ यह कथा दशरथ
को कौशल्या से कही॥ इसप्रकार
दशरथ को श्राप था श्रवण के मातापि
ता अंधो का मल मु॥ अब और कथा
तिहै॥ वृहस्पति का पुत्र कच शुक्र
के पास मृतसंजीवनी विद्या प
ढने को गया तब शुक्र की कन्या
देवयानि उसके उपर मोहित हो
कर कहने लगी के हे कच॥
मैं तेरी साथ विवाह करवाऊंगी
तब कच को कहने मे से तो गुरु
की पुत्री है मैं तेरी साथ विवाह न
ही करवाऊं गा तब देवयानि
को श्राप दिया के पढ़ मृतसंजी
वनी विद्या तेरा फल ना मृत
न होगा होले कीतर कच को भी
श्राप दिया के तेरको क्षत्रिय वर मि
ले जा यह श्राप दे दिया॥ एक समय दे
वे यानि और शर्मिष्ठा की के [illegible]

शाम्विष्णा पहले गौवन मे विचार क
रने को गई वन मे एक सरोव
र था उस मे स्नान करणे के वास्ते
अपणे वस्त्र किनारे पर धर क
रके जल मे स्नान करणे को लग
गई तव उसी काल मे महादेव पा
र्वती आगये तव उन्हो को देख
के रके सरम करके जल की
से जल मे से वाहर निकल
कर के अपने वस्त्रो को पह
रणे लगी तव शाम्विष्णा को
देख पार्वति के वस्त्र जल मे
रक मत करके पहरने
ये तव देवपार्वति को वहुत क्रोध
करा और शाम्विष्णा को वहुत से
दुर्वाक्य दुष्ट वचन कहे तव
शाम्विष्णा को देवपार्वति रूप मे जे

रही ।। आप अपने घर चली आई ।। ६
तने काल मे भाविक एक ययाति रा
जा उसी कूप पर आगये कूपमे देख
ने लगे तब देखेका एक नवजस्त्री कू
पमे गम पडी है तब ययाति कों अ
पना हात पे नीचे कोउ काया ।। ओर उ
सस्त्री को पूछा के तूं कोण है तब उस
को केह के तुलने मेरा हाथ पक
डा है इसवासे तुं लार मे बी
हुं ओर मै शुक्राचार्य की कंन्या हुं देवयानि
मेरा नाम है तब राजा के हया के तुम
के मै छत्री पक तेरे कों मन ही वरताउं
तब देवयानि का के हाके मेर कौता
ओर स्वी पुत्र कच का शाप है उसने य
ह शाप दीया था के तेरा पति छत्रि पर
जा होजावेगा ।। आप मेरे पति हो ।। फेर देव
यानि ओर ययाति देवयानि के घर प
र आये तब देवयानि को अपने पि
ता के पास शर्मिष्ठा कत जो कम
पाया सो सभ वो तो नवरा ओर तब शर्मि

ष्ठा को जोस्तकुं पतत उ पजोरा वार क

कहा के जो आप कहो सो करूं तब गुरु
बोले के मेरी कन्या को प्रसन्न करो
तब देवयानि को पूछा के बोले तुम
किस बात में प्रसन्न हो तब देव
यानि को कहा कि मेरी तू दासी होक
र कर रहे शर्मिष्ठा मेरी दासी होय क
र के रहेगी तब मेरे को आनन्द हो
गा उसी वखत शुक्राचार्य को य
याति राजा कताई अपनी पुत्री
दे दई और शर्मिष्ठा दासी होक
र के ययाति को और देवयानि की
साथ चली गई तब एक समय रा
जा ययाति शर्मिष्ठा के दासी के
साथ रमण भोग करते हुये तब
देवयानि अपने पिता के घर आ
कर के सम कता न कहती हुई ॥
शुक्राचार्यक प्रीत तब शुक्राचार्य
को ययाति को शाप दे दिया के जा तू नष्ट
यौवन हो तब ययाति को कहा के मैं तो अ
वतवकामन तृप्त नहीं हुवा कर शुक्राचा

षि को कहा के तू अपनी वृद्ध दशा को मोकोदे जो तू उसको देदे ना फेर विषय भोग कर तब यपाति को देवपानि के पुत्र यदु आदिकों से कहा के मेरी वृद्ध अवस्था तुम लेलेवो तब वड होंने अंगीकार वृद्ध दशा नहीं करी तब शार्मिष्ठा के वडे पुत्र से कहा तब उससे भी वृद्ध दशा अंगीकार न हि करी फेर शार्मिष्ठा के कनिष्ठ पुत्र को कहा पुरु को तब पुरु कहण लगा के महाराज मैं आपकी वृद्ध अवस्था वृद्ध दशा को अंगीकार करुंगा तब पुरु को अपनी युवावस्था तो पिता को देदे और आप उस को वृद्ध अवस्था प्राप्त होत भई उसी दिन से यपाति राजा युवावस्था लेकर के भोग भोगता भया उसी दिन से राजा प्रसन्न होकर के पुरु को कनिष्ठ पुत्र को राज्य पद देता हुया उसी दिन से पुरु वंश प्रख्यात होता भया ॥ तब से वोह पुरु वंश कहाता है ॥ अलम् ॥ पह कथा भागवत मे कही है ॥ और अनेक राजा की कथा भा० स्कं० ९ मे लिखी है ॥

हेनः अतिके मस्तके अरं शीघ्रं इति वेउदाहर ॥ अथवा
के ... नागरूपः अति नाभं भरेण ॥ यह इसमें कूटौ
, वे कूट श्लोको को लिखते है ॥ को
आप्यते मदन व्याकुलया युवत्या के
भाति पौंड्र कमलं कथमायने ॥
कः नादरो भवति केन रजोनि पीतं
बाधास्ति किं फलमदाहर भाति
वः रम् ॥१॥ अर्थः ~~इति वेउ...~~
... मदनव्याकुलया युवत्या कः आप्यते
पौंड्र कमलं कभाति ॥ आयने कथं ॥
अनादरः क भवति ॥ रजो के न निपीतं
वः पु फलं किं अस्ति ॥ इति वेउदाहर
॥ भातिकेरः ॥ इत्यस्य कोर्थः ॥ अतिके
मस्तके ॥ अरं शीघ्रं ॥ एके हरि ॥ नाग
रूपः ॥ अति नाभमरेण ॥ यह कूट है १॥

माधवस्य मया सर्वं कृतं कर्म विगर्हितं
मु ॥ यदह सर्वमस्त्र ज्यत वेव शरणं ज
तः ॥ २ ॥ इस श्लोक मे स्पष्ट क्रिया है ॥ सो गु
क ... धातु से स्वरूप सिद्ध है ॥ इति वि
स्य यह कूट है ॥ हे माधव यह सम्बोधन
र ॥ कः खं वरति का रम्या का जप्या ॥ कि
ममूषणं को जरः । कीदृश शीतलं का वीर
मर्कट के पिता ॥ वीर मर्कट के पिता ॥ इस प

५

इसे ही कूट है ॥ इसके दो अर्थ है ॥ आदु ग :
इसस जैसे ऋ को अर हो गया र ... रे
क यहाँ संधि ऋ को अर हो गया है ॥ रमाल
पी ॥ रिक ऋचा ॥ कटु क स वर्ग भयो
षण ॥ पिता गुरु : ॥ एक तो यह अर्थ है ॥
अरा यह है ॥ वीर मर्कट के पिता वानरों के
रक लंका के पिता के पित है ॥ ३ ॥ यह रहे
क : खे भाति हतो निशाचर पति के नाम सु
धो मज्जति ॥ क : कोद्द कतरु ... वित्त
सुगमनं किं कुर्वते सज्जना : किं पे
नं नृपतेः किं मम जननितम् वा : र
भरामारतम् ... श्लोको तर मध्य
भाद्रपदम् भ यात्तवा शौवे चे :
४ ॥ अर्थ : हे मना अपि चिरं जीव ॥ जहे
शम्सन्द : ॥ शमरा ॥ मैनाक : ॥ म
परंचतना ॥ रुचिरं प्रीति ॥ ज
वाहन ॥ राजीवं वाम तं ॥ रा व रा
नृपते पत्रं किं तरंग : ॥ यह श्लोक
वी कूट है यह श्लोक अर्थ शीद्र दे
का है ॥ ५ ॥ रुपं श्वभ्रो भूमि दिन ...
रुपं मे कुल गुरु रिद्र जातं जाते मयिके

लकतें के किमधुनारघूणां वंशो ऽस्मि

न्चकाचिद् पिन दाराऽपहरे रामभू ॥४९॥

धोवाने वाढ़ि न पति मर खवचें दे रघु

पतिः ॥५॥ उत्पन्न कुतो वराम मु

वर पुंग वि मातिम मुको न्या

ग न्ना राजा नम ब्रे दे शुारच्य मवं

तु के का पी सम्पम च्चो राजन्तु रामा ऽ

मि षे को विर मतु स क लानि धु

ल के कुले ऽग स्मिन् ऽरूपम्नी पस्य

पत्नी सम भवाति क थं मप तिः रा

म चन्द्रः ॥६॥ यह सम कूट श्लोक है

। तद्क्व्य राजन वक जा हरणेनवाले

ता राऽपहारक तथा पप्ष की चका ख्य पां

चालिका ग्रहण ऽनि पनं जंग मत च्चे

तसापि परदार रतिं न को चो तु ॥१

उमा नाम तो स गी वकी स्त्री का है

पर वाली ताराऽप्रपनि स्त्री स के से हुत

दु पा है इस श्लोक मे यह कूट है ॥

यह इस श्लो क मे म प्रघ्न कर तो नाहि ये

...म नाम सुधाधाम विहगपरस ना र सभु
...पद है इसके विचमे क्रिया पढ्छु र्यो
...अर्थ पढ्छु र्या ॥ अर्थ यह है ॥ हे नः च पादि
का सम्बोधन है ॥ हे नः भोगागिद्र रसवि
हगपरूपको राम नाम सुधा धाम च
रसको पिः पाव ॥ रसास्वादने धातु से
रस प्रयोग सिद्ध होता है ॥ रसना के या है
संध्या वंदन वेला यां तंतडा गढ़ जो है
मे ॥ इस पद मे क्रिया ए हगा ॥ य है
कूट है ॥ अब कहते पद्देश के और राज
नीति के और चाणक्य सार के श्लोकों
को लिखते है ॥ अर्थागमो नित्य भरोगि
ता च प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च वश्या
श्च पुत्रो अर्थकरी च विद्या षट् जीव लोक
स्य सुखानि राजन् ॥१॥ ऋण कर्ता पि
ता शत्रुः माता च व्यभिचारिणी भार्या रू
पवती शत्रुः पुत्र शत्रुर पंडितः ॥२॥ यत्र
विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्राल्पधी
रपि निरस्त पादपे देश एरंडो पि द्रुमा
यते ॥३॥ आपत्सु मित्रं जानीयात् युद्धे
शूरमृणे शुचिम् भार्या क्षीणे च वित्ते

गु च व्यसनेषु च बांधवान् ॥४॥ व्यसनेषु उ-
त्सवेषु ॥ उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्र-
विप्लवे राजद्वारे श्मशाने च यस्तिष्ठति
स बांधवः ॥५॥ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा
शास्त्रं तस्य करोति किं लोचनाभ्यां वि-
हीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥६॥
देवतासु गुरौ गोषु राजसु ब्राह्मणेषु
च नियंतव्यः सदा कोपो बालवृद्धातु-
रेषु च ॥७॥ न सा सभा यत्र न संति वृ-
द्धा वृद्धा न ते ये न वदंति धर्मं धर्मः ॥
स नो यत्र न सत्यमस्ति सत्यं न तद्य-
च्छलमभ्युपैति ॥८॥ संतोषः परमो ध-
र्मो नास्ति राज्ञां सनातनः ॥ असंतुष्टा
द्विजा नष्टाः संतुष्टाश्च महीभुजः स-
लज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जाश्च कु-
लस्त्रियः ॥९॥ सर्पाः पिबंति पवनं न
च दुर्बलास्ते शुष्कैस्तृणैर्वनग-
जाः बलिनो भवंति कंदैः फलैर्मुनिवराः
क्षपयंति कालम् संतोष एव पुरुष-
स्य परं निधानम् ॥१०॥ आपदर्थे ध-